जमीनी स्तर पर हरित क्रांति: भारत के 'नेट-जीरो' लक्ष्य का नेतृत्व करती

UPSC प्रासंगिकता:

- **GS पेपर II:** संघ और राज्यों के कार्य तथा उत्तरदायित्व; स्थानीय स्तर तक शक्तियों और वित्त का हस्तांतरण और उसकी चुनौतियां।
- **GS पेपर III:** संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण और क्षरण, पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन; विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भारतीयों की उपलब्धियां (अक्षय ऊर्जा)।

चर्चा में क्यों?

'मुंबई क्लाइमेट वीक 2026' के दौरान, महाराष्ट्र के भंडारा जिले के बेला ग्राम की सफलता की कहानी को भारत की पहली 'नेट-जीरो' (शून्य कार्बन उत्सर्जन) पंचायत के रूप में पेश किया गया। यह उपलब्धि, केरल, झारखंड और बिहार के समान मॉडलों के साथ यह दर्शाती है कि जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई स्थानीय नेतृत्व के माध्यम से ग्रामीण स्तर पर प्रभावी ढंग से लड़ी जा रही है।

पृष्ठभूमि: स्थानीय जलवायु कार्रवाई का उदय

- जहाँ वैश्विक जलवायु सम्मेलन राष्ट्रीय लक्ष्यों (NDCs) पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वहीं स्थायी प्रथाओं का वास्तविक कार्यान्वयन अक्सर जमीनी स्तर पर होता है।
- 73वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम के तहत, पंचायतों को स्थानीय योजना बनाने का अधिकार प्राप्त है।
- बेला ग्राम का एक पारंपरिक गांव से कार्बन-न्यूट्रल इकाई में बदलना—जो वनीकरण, सौर ऊर्जा और अपशिष्ट प्रबंधन के माध्यम से हासिल किया गया—पंचायती राज मंत्रालय के "जलवायु लचीली पंचायतों" (Climate Resilient Panchayats) के लक्ष्य के लिए एक ब्लूप्रिंट का काम करता है।

IAS-PCS Institute
Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

प्रमुख केस स्टडीज: लचीलेपन के मॉडल

यह लेख समुदाय के नेतृत्व वाले पर्यावरणवाद की ओर अखिल भारतीय बदलाव को उजागर करता है:

- **बेला ग्राम (महाराष्ट्र):** "कचरे से कंचन" (Waste to Wealth) पर ध्यान केंद्रित किया, 90,000 पेड़ लगाए और एलपीजी (LPG) तथा सौर ऊर्जा पर 100% ट्रांजिशन हासिल किया।
- **पेरिजानम (केरल):** इसे "सौर ग्रामम" के रूप में जाना जाता है, यहाँ 850 घरों को 'प्रोज्यूमर' (जो ऊर्जा पैदा भी करते हैं और खपत भी) बनाया गया, जिससे बिजली बिलों में 80% की कटौती हुई।
- **सियारी (झारखंड):** कोयले पर निर्भरता को कम करने के लिए 'डिस्ट्रिक्ट मिनरल फाउंडेशन' (DMF) के फंड का उपयोग किया और सौर लिफ्ट सिचाई तथा झीलों के पुनरुद्धार पर काम किया।
- **गढ़ी (बिहार):** जल स्तर को बहाल करने के लिए 45 मिट्टी के चेक डैम और 90 बोल्डर डैम बनाकर "जलवायु तनाव" (सूखा और अचानक बाढ़) का समाधान किया।

स्थानीय जलवायु कार्रवाई को बड़े पैमाने पर लागू करने में चुनौतियां

- **फंड की कमी:** जहाँ सियारी DMF फंड का उपयोग करता है, वहीं कई पंचायतों के पास सौर बुनियादी ढांचे में निवेश करने के लिए स्वतंत्र वित्तीय संसाधनों (स्वयं के राजस्व स्रोत) की कमी है।
- **तकनीकी विशेषज्ञता:** "नेट-जीरो" प्रोटोकॉल को लागू करने के लिए कार्बन सोखने (Carbon Sequestration) और रिन्यूएबल ग्रिड के तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है, जिसकी कई ग्रामीण निकायों में कमी है।
- **जलवायु संवेदनशीलता:** जैसा कि बिहार में देखा गया, अनियमित मानसून और लू (Heatwaves) अक्सर स्थानीय बुनियादी ढांचे को पूरी तरह विकसित होने से पहले ही नष्ट कर देते हैं।

IAS-PCS Institute
Result Mitra
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

आगे की राह: "जन-केंद्रित" दृष्टिकोण

- **अनिवार्य सौर एकीकरण:** नए भवनों के लिए सोलर रूफटॉप को अनिवार्य बनाने से ऊर्जा परिवर्तन में तेजी आ सकती है।
- **योजनाओं का अभिसरण:** मनरेगा (MGNREGA) को जलवायु लक्ष्यों के साथ जोड़ना (जैसे चेक डैम और वनीकरण के लिए श्रम का उपयोग करना) रोजगार और पर्यावरण सुरक्षा दोनों प्रदान कर सकता है।
- **DMF का संस्थागतकरण:** अन्य राज्यों को भी पारंपरिक बुनियादी ढांचे के बजाय अक्षय ऊर्जा के लिए जिला खनिज कोष (DMF) का उपयोग करने के झारखंड के मॉडल का अनुसरण करना चाहिए।
- **महिला नेतृत्व को सशक्त बनाना:** सरपंच शारदा गयधने की सफलता साबित करती है कि महिला नेता जलवायु कार्रवाई को दैनिक घरेलू दिनचर्या और सामुदायिक स्वास्थ्य से जोड़ने में अधिक प्रभावी होती हैं।

निष्कर्ष

बेला ग्राम जैसी सशक्त पंचायतें साबित करती हैं कि स्थानीय नेतृत्व भारत के नेट-जीरो लक्ष्यों की मुख्य धुरी है। सामुदायिक भागीदारी को अक्षय ऊर्जा के साथ जोड़कर, ग्रामीण भारत जलवायु चुनौतियों को स्थायी आर्थिक अवसरों में बदल सकता है।

UPSC मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: "'नेट-जीरो पंचायतों' जैसी पहलों की सफलता यह दर्शाती है कि जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई स्थानीय स्तर पर ही जीती या हारी जाती है।" इस संदर्भ में, भारत की जलवायु प्रतिबद्धताओं को प्राप्त करने में पंचायती राज संस्थाओं (PRIs) की भूमिका पर चर्चा कीजिए। साथ ही, ऐसे मॉडलों को बड़े पैमाने पर लागू करने में स्थानीय निकायों के सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डालिए। **(250 शब्द | 15 अंक)**